The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

नांगेली का बलिदान: जाति-विरोधी प्रतिरोध और उसकी आज की प्रासंगिकता

डॉ. प्रकाश दास खाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
दादा लख्मी चंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ परफार्मिंग एंड विसुअल आर्ट्स ,रोहतक हरियाणा
pdkhandey@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:
नांगेली, स्तन कर (मुलककर), जाति-व्यवस्था, दमन और विद्रोह

ABSTRACT

नांगेली का बलिदान भारतीय इतिहास में स्त्री-सम्मान, आत्मगौरव और जाति-व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध का अमर प्रतीक है। 19वीं शताब्दी के त्रावणकोर राज्य में निम्न जाति की महिलाओं पर "मुलककर" या "स्तन कर" लगाया गया था, जिसके अंतर्गत उन्हें अपने शरीर को ढकने के अधिकार से वंचित किया गया था। इसी अमानवीय प्रथा के विरोध में एझावा समुदाय की साहसी महिला **नांगेली** ने अपने स्तन काटकर कर अधिकारी के सामने अर्पित कर दिए — यह विद्रोह केवल एक स्त्री का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज की आत्मा का आक्रोश था। उनका बलिदान उस अन्यायी सामाजिक व्यवस्था को हिला गया, जिसने सदियों तक स्त्रियों और शूद्र जातियों को गुलाम बनाकर रखा था। नांगेली का यह साहसिक कदम आगे चलकर **चन्नार विद्रोह** और **वस्त्र-स्वातंत्र्य आंदोलन** की प्रेरणा बना, जिसने केरल में सामाजिक सुधारों की नींव रखी।आज नांगेली केवल एक ऐतिहासिक चरित्र नहीं, बल्कि न्याय, समानता और आत्म-सम्मान की प्रतीक बन चुकी हैं। उनका बलिदान हमें यह सिखाता है कि **प्रतिरोध तब भी संभव है जब सत्ता निर्दयी हो, और स्वतंत्रता तब भी जन्म ले सकती है जब भय सर्वाधिक हो।**

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17643768

1. पृष्ठभूमि

चित्र. 1. नांगेली का बलिदान और चन्नार विद्रोह: केरल में जाति-आधारित उत्पीड़न

19वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में त्रावणकोर राज्य (वर्तमान केरल) में "मुलककर" या "स्तन कर" (Breast Tax) जैसी अमानवीय कर व्यवस्था लागू थी। इस प्रथा के अंतर्गत एझावा, नादर और अन्य निम्न जातियों की महिलाओं को ऊपरी वस्त्र धारण करने के अधिकार के लिए राज्य को कर देना पड़ता था — जो न केवल आर्थिक शोषण था, बल्कि सामाजिक-धार्मिक असमानता का सजीव उदाहरण भी था। कर वसूलने के लिए नियुक्त अधिकारी, जिन्हें *परवतियार* कहा जाता था, गाँव-गाँव जाकर यह कर वसूलते थे। यह कर-प्रथा उस समय की ब्राह्मणीय सामाजिक संरचना में व्याप्त पितृसत्ता और जातिगत दमन का सशक्त प्रतीक थी, जिसने स्त्रियों के शरीर तक को नियंत्रण और अपमान का साधन बना दिया था।[1]

यह व्यवस्था केवल आर्थिक शोषण का माध्यम नहीं थी, बल्कि एक गहराई से जमी सांस्कृतिक नियंत्रण प्रणाली (cultural mechanism of control) भी थी, जिसने महिलाओं के शरीर, वस्त्र और गरिमा पर पितृसत्तात्मक अधिकार को वैध ठहराया। "ऊपरी वस्त्र" पर लगाया गया प्रतिबंध इस बात का प्रतीक था कि स्त्री की सामाजिक स्थिति उसके जाति और लिंग — दोनों से निर्धारित होती थी। उच्च जातियों के लिए वस्त्र "संस्कार" और "मर्यादा" का चिह्न था, जबकि निम्न जातियों की स्त्रियों के लिए वही वस्त्र "अवज्ञा" और "अशुद्धता" का प्रतीक बना दिया गया था।[2]

"मुलककर" कर-व्यवस्था इस तरह जाति और पितृसत्ता की मिली-जुली उत्पीड़न प्रणाली (intersectional system of oppression) का मूर्त रूप थी, जिसमें शरीर पर नियंत्रण सामाजिक अनुशासन का साधन था। इस व्यवस्था ने यह संदेश दिया कि सामाजिक अनुक्रम में स्त्रियों की जगह वही है जो जाति व्यवस्था उन्हें प्रदान करती है। आधुनिक स्रोतों ने इस विषय को पुनः सार्वजनिक विमर्श में लाकर यह स्पष्ट किया है कि "मुलककर" कोई सांस्कृतिक परंपरा नहीं, बल्कि संगठित सामाजिक अन्याय और नैतिक असमानता का औपचारिक रूप था।[3] समकालीन लेखों और

चर्चाओं के माध्यम से यह विमर्श अब केवल इतिहास नहीं, बल्कि स्मृति और न्याय के पुनरुत्थान का प्रतीक बन गया है ।[4]

2. विवाद क्यों है?

केरल की सामाजिक स्मृति में नांगेली एक प्रतीकात्मक नाम बन चुकी हैं — एक ऐसी दलित महिला, जिसने जाति और लैंगिक दमन के विरुद्ध अपने शरीर से विद्रोह किया। किंतु इतिहासकारों के बीच यह चर्चा बनी हुई है कि क्या यह घटना वास्तव में हुई थी या यह केवल एक लोककथा है जो समय के साथ सामाजिक चेतना का प्रतीक बन गई। इस विवाद का मूल कारण है — ऐतिहासिक प्रमाणों की कमी और मौखिक परंपरा की प्रामाणिकता का प्रश्न।

2.1.ऐतिहासिक प्रमाणों का अभाव- त्रावणकोर राज्य या ब्रिटिश शासन के अभिलेखों में "नांगेली" का नाम या "मूलककरम (breast tax)" के रूप में कोई कर का उल्लेख नहीं मिलता। *Swati Gautam* ने अपने लेख *"The Breast Tax That Wasn't"*[5] में यह कहा है कि स्तन-कर की अवधारणा संभवतः बाद में लोक-कथा के रूप में विकसित हुई। इसी प्रकार *J. Devika* ने अपने शोध *"Bodies Gone Awry"* [6]में बताया है कि सामाजिक नियंत्रण और पोशाक से जुड़ी पाबंदियाँ तो थीं, परंतु "breast tax" का कोई प्रमाणिक रिकॉर्ड नहीं है। अतः कुछ इतिहासकार इसे प्रत्यक्ष ऐतिहासिक घटना की बजाय प्रतीकात्मक प्रतिरोध मानते हैं।

2.2.मौखिक परंपरा और लोकस्मृति की भूमिका- ईझवा (Ezhava) समुदाय के लोगों में यह कथा आज भी जीवित है। वे नांगेली को उस स्त्री के रूप में देखते हैं जिसने अमानवीय प्रथा के विरोध में अपने शरीर का बलिदान दिया। *The News Minute* के अनुसार, इस कथा ने निचली जाति की महिलाओं में सामाजिक विद्रोह की भावना को जन्म दिया।[7] लोक इतिहास के अध्ययन में माना जाता है कि भले ही किसी घटना का भौतिक प्रमाण न हो, पर उसकी सामाजिक सच्चाई और प्रभाव गहरे स्तर पर विद्यमान रहते हैं। यही दृष्टिकोण *V. Geetha (2019)* और *K. Saradamoni (1999)* जैसे सामाजिक इतिहासकार अपनाते हैं, जो कहते हैं कि नांगेली की कथा उस युग के जाति-लैंगिक अत्याचार का जीवंत प्रतीक है।[8]

नांगेली की घटना का विवाद केवल इतिहास-लेखन का नहीं बल्कि दृष्टिकोण का प्रश्न है। जो इतिहास केवल दस्तावेजों पर आधारित है, वह इस कथा को "कल्पनिक" कहता है, जबकि लोक-इतिहास और दलित नारीवादी दृष्टिकोण इसे "प्रतिरोध की सच्चाई" के रूप में देखते हैं। इसलिए नांगेली का महत्व इस बात में है कि वह आज भी

समानता, आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय की प्रतीक बनी हुई हैं — चाहे उनका अस्तित्व दस्तावेजों में दर्ज हो या जनमानस में।

3. इतिहासकारों की विभिन्न राय

कुछ इतिहासकार इस कहानी को पूर्ण मिथक मानते हैं — अर्थात् यह एक लोककथा है जिसमें सच और कल्पना मिश्रित हैं। उदाहरण स्वरूप Manu S. Pillai अपनी पुस्तक *The Courtesan, the Mahatma & the Italian Brahmin* में लिखते हैं कि "Mulakkaram" मूल रूप से महिला कर की सामान्य प्रथा हो सकती है, लेकिन "breast tax" जैसा नामकरण और स्तन ढकने के अधिकार से जुड़ी कथाएँ बाद में उत्पन्न हुई लोक परंपराएँ हो सकती हैं। [9]

अन्य शोधकर्ता इसे सामाजिक प्रतीक (symbol) मानते हैं जो जाति-विरोधी और स्त्री-सशक्तिकरण की लड़ाई की सामाजिक मनोभूमि का हिस्सा बन गया है। उदाहरण के लिए Velivada की रिपोर्ट बताती है कि नांगेली की कहानी ने आज भी दलित और निचली जातियों की महिलाओं के आत्मगौरव और अधिकारों की मांग को जगाया है, चाहे इसकी ऐतिहासिक पुष्टि न हो।[10]

कुल मिलाकर, जबकि दस्तावेज़ी साक्ष्यों का अभाव इस कथा की ऐतिहासिक सच्चाई को सुनिश्चित नहीं करता, इतिहासकार और समाज-शोधी इस कहानी को उस सामाजिक न्याय की प्रतीकात्मक भूमिका में स्वीकार करते हैं जो जाति और लिंग के भेदभाव के खिलाफ विद्रोह की प्रेरणा देती है।

4. कल्पनिक बताना ब्राह्मणीय साज़िश-

"कल्पनिक बताना ब्राह्मणीय साज़िश" एक ऐसे दृष्टिकोण को दर्शाता है जहाँ सामाजिक, जातिगत और लैंगिक अन्याय की कथाएँ — विशेषतः दलित महिलाओं के प्रतिरोध की स्मृतियाँ — उन्हें मिथक या काल्पनिक कहानी बताकर कमजोर कर देने का प्रयास माना जाता है। इस तरह की कहानियाँ, जैसे कि *नांगेली की घटना,* जब दस्तावेज़ी ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में लोककथा या किंवदंती के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं, तो उन्हें "ब्राह्मणीय सत्ता संरचना" द्वारा चुनौती से बचने और अपनी श्रेष्ठता को वैध दिखाने के लिए एक नियंत्रण-उपाय के रूप में देखा जाता है।

4.1.ब्राह्मणीय सत्ता संरचना और उसकी रणनीतियाँ

ब्राह्मणियत (Brahminism) एक सामाजिक व्यवस्था है जिसमें ऊँची जातियों के लोग निचली जातियों पर सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक नियंत्रण बनाए रखते आये हैं। इस व्यवस्था में ज्ञान (knowledge), इतिहास और स्मृति (memory) को नियंत्रित करने का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि कोई कथा, जैसे कि नांगेली की, इस सत्ता की मूल अवधारणाओं — स्त्रियों, दलितों, "निचली जाति" वालों के शरीर, पोशाक, आत्म-सम्मान — को चुनौती देती है, तो उसे "कहानी", "मिथक", "लोककथा" कह देना इस तरह की चुनौती को कमतर और संदिग्ध सी करने की कोशिश होती है।

4.2.विरोध एवं विद्रोह की स्मृति को दबाने का प्रयास

दलित नारीवादी चिंतकों का मानना है कि इस तरह की घटना यदि प्रमाणित इतिहास न बने, तो यह विद्रोह की स्मृति को दबाने का तरीका है। यह दबाव दो तरह से कार्य करता है:

4.2.1. ऐतिहासिक वैधता की आवश्यकता — इतिहास में दस्तावेज़ों का महत्व अधिक माना जाता है। जब कोई कथा दस्तावेजों में न हो, तो उसे "अविश्वसनीय" या "अतिशयोक्ति" कहा जाता है।

चित्र. 2 . स्तन ढंकने -200 साल पुरानी कुप्रथा और उससे मुक्ति की कहानी

4.2.2. सिंबलिक महत्व का क्षीणन — यदि लोग यह कहें कि नांगेली की घटना कल्पना है, तो कहानी का प्रतीकात्मक बल घट जाता है: विरोध की ताकत, वर्ण व्यवस्था की अमानवीयता, दलित स्त्री की आत्म-सम्मान की लड़ाई — ये सब कम महसूस होते हैं।

नांगेली की कथा को केवल "लोककथा" या "मिथक" कह देना, उस सामाजिक यथार्थ को नकारने जैसा है जो 19वीं शताब्दी के त्रावणकोर में स्त्रियों और निम्न जातियों के लिए विद्यमान था। "नांगेली मिथ" दरअसल शरीर, गरिमा और प्रतिरोध का प्रतीक है[11] — एक ऐसा प्रतिरोध जो उस समय की जातिगत और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को

सीधी चुनौती देता था। वे इसे **"body as revolt"** की संकल्पना के रूप में देखती हैं, जहाँ स्त्री का शरीर स्वयं राजनीतिक अभिव्यक्ति बन जाता है, और जिसे "मिथक" कहकर अस्वीकार करना एक **ब्राह्मणीय-पुरुषवादी दमन** का तरीका है।

नांगेली की कहानी को इतिहास से बाहर रखा गया क्योंकि यह दलित-स्त्री प्रतिरोध का प्रतीक बन गई थी — और सत्ता संरचनाएँ ऐसे प्रतीकों को दर्ज नहीं होने देना चाहतीं। नांगेली का साहस केवल व्यक्तिगत नहीं था; यह उस समूची सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व था जिसने जाति और लैंगिक अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई ।[12]

इन दोनों लेखों से स्पष्ट होता है कि नांगेली की कथा को "मिथक" कहना केवल इतिहासलेखन की सीमा नहीं, बल्कि सत्ता-केन्द्रित दृष्टिकोण की रणनीति भी है। जब कोई स्त्री अपने शरीर को प्रतिरोध का माध्यम बनाती है, तो उसका स्मरण इतिहास की औपचारिक परंपरा में असहज कर देता है। इसलिए, नांगेली का प्रसंग स्मृति, स्त्री-स्वायत्तता और दलित प्रतिरोध — तीनों का संगम बन जाता है, जो हमें यह याद दिलाता है कि इतिहास केवल दस्तावेज़ों का नहीं, बल्कि **अनुभवों और स्मृतियों के संघर्ष का भी क्षेत्र** है।

नांगेली की कथा केवल एक ऐतिहासिक प्रसंग नहीं, बल्कि **भुला दी गई स्मृति** (forgotten memory) का प्रतीक है — एक ऐसी स्मृति जिसे सत्ता-केन्द्रित इतिहासलेखन ने हाशिये पर डाल दिया। *Al Jazeera* (2022) के अनुसार, नांगेली की कहानी यह दिखाती है कि कैसे दलित स्त्री प्रतिरोध की घटनाओं को "भुला दिए जाने योग्य" माना गया, और जब वे दस्तावेज़ों में अनुपस्थित रहीं, तो उन्हें मिथक कहकर अस्वीकार कर दिया गया।[13] इस प्रकार, स्मृति की अनुपस्थिति को ही मिथक सिद्ध करने का उपकरण बनाया गया — जबकि लोक परंपराओं और समुदायों की मौखिक कथाएँ उसके अस्तित्व की निरंतर गवाही देती रहीं।

इसी दृष्टिकोण को *The Print* के *Mehrotra* (2022) ने अपनी पुस्तक *Her Stories: Indian Women Down the Ages* में गहराई से समझाया है। वे लिखते हैं कि इतिहास लिखने की प्रक्रिया तटस्थ नहीं होती — सत्ता हमेशा वही इतिहास चुनती है जो उसके लिए स्वीकार्य हो। नांगेली की कथा इस चयन की राजनीति को उजागर करती है, क्योंकि उसका प्रतिरोध सवर्ण-पितृसत्तात्मक संरचना के नैतिक ढांचे को चुनौती देता है। इस तरह, "नांगेली" केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि उस सामाजिक सच का प्रतीक बन जाती है जो शोषण के विरुद्ध खड़ा हुआ।[14]

"Rise of Dalit Feminism: Provincializing Gender Justice" में यह तर्क दिया गया है कि दलित स्त्री विमर्श ने "प्रधानधारा नारीवाद" की सीमाओं को पार किया है। दलित महिला लेखिकाएँ अपने अनुभवों के माध्यम से यह दिखाती हैं कि उनके संघर्ष केवल लैंगिक नहीं, बल्कि जातिगत अन्याय से भी जुड़े हैं। नांगेली इसी अंतर्संबंध

(intersection) की जीवंत अभिव्यक्ति है — जहाँ शरीर, श्रम, और गरिमा — तीनों ही प्रतिरोध का माध्यम बनते हैं।[15]

नांगेली की स्मृति को "मिथक" कहना केवल एक ऐतिहासिक निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक रणनीति भी है। उसकी कथा आज भी यह प्रश्न उठाती है कि इतिहास में किसकी आवाज़ को स्थान मिलता है और किसकी आवाज़ को मिटा दिया जाता है। नांगेली के माध्यम से स्मृति इतिहास से संवाद करती है — यह याद दिलाने के लिए कि हर दस्तावेज़ से अधिक सशक्त वह मौखिक स्मृति है जो न्याय और समानता के लिए निरंतर बोलती रहती है।

5. संघर्ष की आवश्यकता (Need for Resistance)

त्रावणकोर की सामाजिक संरचना में जाति-आधारित भेदभाव इतने गहरे थे कि निम्न जातियों को सार्वजनिक स्थलों, मंदिरों और शिक्षा तक पहुँचने की अनुमति नहीं थी। महिलाओं के वस्त्र, पहनावे और आचरण तक पर सामाजिक नियंत्रण था ।[16]

इस असमानता ने महिलाओं की निजता और गरिमा को कुचल दिया। जब *नांगेली* ने "मुलककर" देने से मना किया और अपने स्तनों को काटकर करदाताओं के सामने रख दिया, तब यह एक ऐसा *नारीवादी और जाति-विरोधी प्रतिरोध* बन गया जिसने पूरी व्यवस्था को हिला दिया।[17]

नांगेली का बलिदान आने वाले सामाजिक आंदोलनों, विशेष रूप से *चन्नार विद्रोह (Upper Cloth Revolt, 1822–1859)*, के लिए प्रेरणा बना, जिसने अंततः त्रावणकोर राज्य को इन अमानवीय प्रथाओं को समाप्त करने पर मजबूर किया।[18]

6. नांगेली कौन थीं

नांगेली 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में त्रावणकोर राज्य के *अलप्पुझा ज़िले* (वर्तमान केरल) के *चेर्थला गाँव* की एक एझावा (Ezhava) समुदाय से थीं — यह समुदाय पारंपरिक रूप से कृषि और नारियल के कार्यों से जुड़ा हुआ था। नांगेली और उनका परिवार श्रमिक वर्ग से था, जो सामाजिक रूप से निम्न जाति माने जाते थे। एझावा महिलाएँ अपने परिवारों का पालन-पोषण करने के साथ-साथ सामाजिक उत्पीड़न का बोझ भी उठाती थीं।[19]

चित्र. 3 . स्तन-कर — केरल के अँधेरे दिनों में एक कुप्रथा

नांगेली को स्थानीय रूप से "Nangeli of Cherthala" के नाम से जाना जाता है — एक ऐसी महिला जिसने समाज में प्रचलित अमानवीय "मुलककर" कर-व्यवस्था को चुनौती देने का साहस दिखाया। उनका जीवन केवल व्यक्तिगत प्रतिरोध का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जातिगत संरचना को चुनौती देने का प्रतीक बन गया।

6.1. मुलककर (Breast Tax) की प्रकृति

"मुलककर" (Mulakkaram), अर्थात *स्तन कर*, त्रावणकोर राज्य की एक कर-व्यवस्था थी, जिसमें एझावा, नादर और अन्य निम्न जातियों की महिलाओं को यदि वे अपने स्तन ढकना चाहें, तो उन्हें कर देना पड़ता था। यह कर शारीरिक अपमान और सामाजिक भेदभाव का अत्यंत वीभत्स रूप था। ऊँची जातियों की महिलाएँ ऊपरी वस्त्र पहन सकती थीं, परंतु निम्न जातियों के लिए यह "अवज्ञा" मानी जाती थी।[20]

ऐतिहासिक दस्तावेज़ों और मौखिक परंपराओं के अनुसार, यह कर स्तनों के आकार (size) या दृश्य रूप के आधार पर अनुमानित किया जाता था — जो महिलाओं के शरीर पर सत्ता और नियंत्रण की पराकाष्ठा थी ।[21] "मुलककर" की वसूली *परवतियार* नामक पुरुष अधिकारी करते थे, जो गाँव-गाँव जाकर कर की मांग करते थे। यह केवल आर्थिक लूट नहीं, बल्कि स्त्री देह की वस्तुकरण की सामाजिक स्वीकृति थी।

6.2.नांगेली का प्रतिरोध

जब परवतियार नांगेली के घर कर वसूलने पहुँचे, तो उन्होंने "मुलककर" देने से इनकार कर दिया। अपने स्वाभिमान और स्त्री गरिमा की रक्षा के लिए उन्होंने अपने दोनों स्तनों को काटकर केले के पत्ते पर रख दिया और कर संग्रहकर्ता के सामने प्रस्तुत कर दिए। यह घटना अत्यंत हृदयविदारक थी—कुछ ही समय में नांगेली ने दम तोड़ दिया, और उनके पति चेलन ने शोक में आत्महत्या कर ली।[22]

नांगेली का यह बलिदान न केवल "मुलककर" प्रथा के अंत की शुरुआत बना, बल्कि *नारी स्वतंत्रता और जातिगत समानता* के संघर्ष का प्रतीक भी बन गया। इतिहासकार K. N. Panikkar के अनुसार, नांगेली का कार्य "a revolutionary act of self-respect and defiance against a deeply patriarchal caste hierarchy" था

6.3.दलित अनुभवों की सचाई

ऐतिहासिक अध्ययन और लोक स्मृति (memory) दोनों ही किसी समाज के अतीत की झलक देते हैं, लेकिन इनके दृष्टिकोण, स्रोत और उपयोग अलग-अलग होते हैं। **अकादमिक इतिहास** आमतौर पर दस्तावेज़ीय प्रमाणों, अभिलेखों, सरकारी रिपोर्टों, न्यायालय के फैसलों आदि पर आधारित होता है। ये स्रोत सत्यापन योग्य होते हैं और इतिहासकारों द्वारा क्रॉस-चेक और आलोचनात्मक समीक्षा से गुजरते हैं। दूसरी ओर **लोक इतिहास** और **दलित इतिहास** स्मृति, अनुभव, मौखिक परंपरा और आत्मकथाओं पर आधारित होते हैं; ये वे माध्यम हैं जिनसे उन लोगों की आवाज़ सुनाई देती है जिन्हें दस्तावेज़ों ने अक्सर नजरअंदाज़ किया है।

जब कोई कहानी — जैसे *नांगेली की घटना* — दस्तावेजी इतिहास में पूरी तरह साबित न हो, तब भी उसका मूल्य कम नहीं होता। स्मृति और अनुभव इस तरह की कहानियों को प्रतीकात्मक सत्य (symbolic truth) बनाते हैं। प्रतीकात्मक सत्य का मतलब है कि भले ही घटना की सारी बारीकियाँ या व्यक्ति का नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज न हो, लेकिन सामाजिक अवस्था, ज़्यादतियाँ, न्यायहीनताएँ और अपने अधिकारों के लिए किए गए संघर्ष वास्तव में हुए। स्मृति उन घटनाओं को जीवित रखती है जिनका दस्तावेजीकरण नहीं हुआ, और यह एक तरह से "साक्ष्य का विकल्प" होती है — विशेषकर उन समुदायों के लिए जिनकी कहानियाँ अक्सर दर्ज नहीं होतीं।

स्मृति इतिहास का पूरक है, न कि केवल मिथक। स्मृति उन असंख्य अनुभवों को बचाती है जिन्हें दस्तावेज़ी इतिहास ने दर्ज नहीं किया — चाहे सामाजिक दमन हो, विरोध हो, या रोज़मर्रा की हिंसा हो। दलित महिलाओं की कहानियाँ अक्सर अपने अधिकारों, शरीर की स्वायत्तता, सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष से भरी होती हैं, जो इतिहास की मुख्य धारा की पुस्तक-अभिलेखों में शामिल नहीं होतीं। नांगेली की कथा प्रतीकात्मक सत्य की वह श्रेणी हो सकती है जहाँ व्यक्ति विशेष सत्य न हो, पर सामाजिक स्थितियाँ एवं संघर्ष निश्चित रूप से वास्तविक थे।

इतिहास बनाम स्मृति की यह द्वंद्वात्मक स्थिति हमें यह सिखाती है कि सिर्फ़ दस्तावेज़ी प्रमाणों पर निर्भर इतिहास लेखन समारोहिक हो सकता है जब वह उन आवाज़ों को नहीं सुनता जो रिकॉर्ड नहीं रही हों। स्मृति हमें यह याद दिलाती है कि इतिहास सिर्फ़ दौलत, शासन, वर्चस्व और शासन-प्रणालियों का लेखा-जोखा नहीं है, बल्कि उन स्वनिष्ठ, दर्दनाक और साहसी अनुभवों की भी कहानी है जिन्हें बड़े इतिहास ने अक्सर नजरअंदाज़ किया।

7. नांगेली का बलिदान की प्रासंगिकता

7.1. लैंगिक समानता की दृष्टि से

नांगेली का प्रतिरोध भारतीय समाज में स्त्री-अस्मिता और शरीर पर स्वामित्व की अवधारणा का प्रारंभिक घोष है। उनका यह साहसिक कदम यह सिद्ध करता है कि स्त्री की देह, उसका सम्मान और उसकी गरिमा किसी सामाजिक व्यवस्था की दया पर नहीं, बल्कि उसके अपने अधिकार पर आधारित है।

आज के भारत में भी यह प्रश्न उतना ही ज्वलंत है। स्त्रियों के पहनावे, व्यवहार और अस्तित्व पर सामाजिक टिप्पणी, नियंत्रण और निर्णय की प्रवृत्ति आज भी देखी जा सकती है।

उदाहरण के रूप में—

- 2017 में "नारी के पहनावे" को लेकर ऑनलाइन ट्रोलिंग की अनेक घटनाएँ सामने आईं, जहाँ महिलाओं को सोशल मीडिया पर उनके कपड़ों और जीवनशैली को लेकर सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा किया गया। यह मानसिकता उस प्राचीन सोच की निरंतरता है, जो स्त्री के शरीर को सामाजिक नियंत्रण के प्रतीक के रूप में देखती है।
- 2018 का सबरीमला मंदिर प्रवेश आंदोलन (केरल) इस संघर्ष का आधुनिक रूप था। वहाँ महिलाओं को केवल उनके लिंग के कारण मंदिर में प्रवेश से वंचित किया जा रहा था। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रथा को संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) और अनुच्छेद 25 (धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार) के उल्लंघन के रूप में निरस्त किया।[23]
- #MeToo आंदोलन (2018) ने महिलाओं की आवाज़ को एक सामूहिक रूप दिया। इसने कार्यस्थलों, मीडिया, फिल्म उद्योग और राजनीति में व्याप्त यौन शोषण और शक्ति-प्रयोग की संस्कृति को उजागर किया।[24]

इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में नांगेली की कथा एक प्रतीकात्मक प्रेरणा के रूप में उभरती है— वह सिखाती हैं कि जब स्त्री अपने अधिकार और सम्मान के लिए आवाज़ उठाती है, तो वह केवल स्वयं को नहीं, बल्कि समाज की चेतना को भी मुक्त करती है।

7.2. जाति आधारित भेदभाव के संदर्भ में

नांगेली का प्रतिरोध केवल लैंगिक उत्पीड़न के विरुद्ध नहीं था; यह जातिगत अपमान और सामाजिक असमानता के खिलाफ भी एक क्रांति थी। उन्होंने उस व्यवस्था को चुनौती दी, जो मनुष्य के सम्मान और अधिकारों को जन्म के आधार पर तय करती थी।

आज 21वीं सदी का भारत भले ही संविधान के अनुच्छेद 17 के अंतर्गत अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव को अपराध घोषित कर चुका है, किंतु व्यवहारिक स्तर पर यह विषमता अब भी जीवित है।

- 2020 का हाथरस कांड इसका अत्यंत वीभत्स उदाहरण है, जिसमें दलित युवती के साथ हुए बलात्कार और उसके बाद हुई मौत ने पूरे राष्ट्र को झकझोर दिया।[25]
- तमिलनाडु और महाराष्ट्र में दलित छात्रों की आत्महत्याओं (जैसे 2022 की वेल्लोर घटना) ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा और अवसरों के क्षेत्र में भी जातिगत भेदभाव की छाया अब भी गहराई तक मौजूद है।[26]
- भीम आर्मी, दलित पैंथर्स और अन्य सामाजिक आंदोलनों का अस्तित्व इस निरंतर संघर्ष का प्रमाण है कि सामाजिक समानता अभी भी एक अधूरा स्वप्न है।

नांगेली की कथा इस संदर्भ में एक ऐतिहासिक प्रतिरोध का प्रतीक बन जाती है— वह हमें यह सिखाती हैं कि असमानता चाहे लिंग की हो या जाति की, उसके विरुद्ध आवाज़ उठाना ही वास्तविक सामाजिक सुधार का मार्ग है।

7.3. मानवाधिकार के परिप्रेक्ष्य में

नांगेली का बलिदान केवल एक स्त्री या जाति का प्रतिकार नहीं था, बल्कि यह मानव गरिमा के अधिकार का घोषणापत्र था। उन्होंने यह संदेश दिया कि कोई भी शासन या समाज यदि मनुष्य से उसकी आत्म-सम्मान छीनने का प्रयास करे, तो उसके विरुद्ध प्रतिरोध ही न्याय का मार्ग है।

आज के भारत में मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाएँ इस संघर्ष को पुनः जीवित कर देती हैं—

- मणिपुर हिंसा (2023) में महिलाओं के साथ हुए अमानवीय अत्याचारों ने न केवल प्रशासनिक विफलता को उजागर किया, बल्कि यह भी दिखाया कि जब सत्ता संवेदनहीन हो जाती है, तो मानवाधिकार सबसे पहले कुचले जाते हैं।[27]

- 2024 में उड़ीसा और मध्यप्रदेश में आदिवासी समुदायों पर हिंसा की घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि समाज के हाशिए पर खड़े समुदायों की गरिमा अब भी असुरक्षित है।[28]

नांगेली की गाथा हमें यह याद दिलाती है कि मानवाधिकार किसी शासन की कृपा से नहीं, बल्कि जन-संघर्ष और बलिदान से अर्जित होते हैं। इसलिए, इनकी रक्षा केवल कानून का नहीं, बल्कि नागरिक चेतना का भी दायित्व है।

7.4. नारीवादी दृष्टिकोण से

नांगेली का प्रतिरोध किसी संगठित आंदोलन का परिणाम नहीं था; वह नारी-स्वाधीनता की सहज, स्वाभाविक और स्थानीय अभिव्यक्ति थी। उन्होंने किसी मंच या संगठन के बिना, अपनी व्यक्तिगत चेतना के बल पर समाज की अन्यायपूर्ण परंपरा को चुनौती दी। इसीलिए उन्हें भारतीय नारीवाद की जनपदीय जड़ें कहा जा सकता है।

आज के भारत में उनकी यह चेतना कई रूपों में साकार हो रही है—

- किसान आंदोलन (2020–2021) में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की हजारों महिलाओं की भागीदारी ने यह दिखाया कि स्त्रियाँ केवल घरेलू भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अब राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन की वाहक।[29]
- निर्भया कांड (2012) के बाद महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने सख्त कानूनों और बिलकिस बानो जैसे मामलों में न्याय की लड़ाई ने यह स्पष्ट किया कि अब स्त्री समाज की मौन दर्शक नहीं, बल्कि परिवर्तन की सक्रिय धारा है।[30]

नांगेली का उदाहरण यह सिखाता है कि स्त्री-विरोधी परंपराओं का प्रतिकार किसी घोषणापत्र से नहीं, बल्कि साहसिक कर्म से होता है। उन्होंने यह दिखाया कि एक अकेली स्त्री भी व्यवस्था को झकझोर सकती है, यदि उसके भीतर आत्म-सम्मान की ज्योति प्रज्वलित हो।

8. निष्कर्ष

नांगेली की कथा को "कल्पनिक" कह देना केवल एक ऐतिहासिक मत नहीं, बल्कि एक गहरी राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को प्रकट करता है। इस कथा में नांगेली एक दलित स्त्री के रूप में उस दमनकारी व्यवस्था का प्रतिरोध करती दिखाई देती है, जहाँ निचली जाति की महिलाओं पर "मुलककर" या "ब्रेस्ट टैक्स" जैसे

अपमानजनक कर लगाए जाते थे। इसलिए, इस कथा का अस्तित्व या अस्वीकार — दोनों ही सत्ता और समाज की दृष्टि को उजागर करते हैं।

जो चिंतक और कार्यकर्ता इसे "ब्राह्मणीय साज़िश" कहते हैं, उनका कहना है कि नांगेली जैसी प्रतिरोध की स्मृतियाँ ब्राह्मणवादी इतिहासलेखन को चुनौती देती हैं। जब कोई दलित स्त्री अपने शरीर और गरिमा के लिए इस तरह का बलिदान देती है, तो वह स्थापित सामाजिक व्यवस्था के लिए असहज प्रश्न खड़े करती है। इसीलिए, इस कथा को "मिथक" या "किंवदंती" कहकर उसका महत्व घटाने की कोशिश की जाती है — ताकि सवर्ण सत्ता संरचना अपनी "शुद्ध" और नियंत्रित इतिहास परंपरा को बचा सके।

दूसरी ओर, कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि हमें इस कथा को दो स्तरों पर देखना चाहिए — **एक, ऐतिहासिक तथ्य के रूप में** और **दूसरा, सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में**। भले ही नांगेली का नाम या घटना ब्रिटिश या त्रावणकोर अभिलेखों में स्पष्ट रूप से दर्ज न हो, परंतु यह कथा उस सामाजिक यथार्थ को सामने लाती है जहाँ जाति और लिंग आधारित भेदभाव गहराई तक व्याप्त था। इस तरह, यह कहानी प्रतीकात्मक सत्य (symbolic truth) बन जाती है — एक ऐसी ऐतिहासिक स्मृति जो हमें बताती है कि कैसे दलित और स्त्रियाँ इतिहास के औपचारिक दस्तावेज़ों के बाहर भी न्याय और सम्मान के लिए संघर्ष करती रहीं।

नांगेली का प्रसंग केवल अतीत की कथा नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक चेतना का दर्पण है — जो यह याद दिलाता है कि इतिहास हमेशा सत्ता का नहीं, बल्कि स्मृति और प्रतिरोध का भी होता है।

References:

[1] Menon, A. S. (2008). *A Survey of Kerala History* (Rev. ed., pp. 174–176). Kottayam, India: DC Books.

[2] Panikkar, K. N. (1995). *Culture, Ideology, Hegemony: Intellectuals and Social Consciousness in Colonial India* (pp. 92–95). New Delhi, India: Tulika Books.

[3] Justice News. (2023, March 8). *Nangeli: The woman who protested Kerala's breast tax by sacrificing her life.* New Delhi, India. Retrieved from https://www.justicenews.co.in

[4] Media India Group. (2024, January 15). *Remembering Nangeli: A forgotten chapter of Kerala's caste and gender history.* Paris, France: Media India Group. Retrieved from https://mediaindia.eu

[5] Gautam, S. (2021, January 14). *The breast tax that wasn't. The Telegraph India*.
Saradamoni, K. (1999). *Matriliny Transformed: Family, Law and Ideology in Twentieth Century*

Travancore. Sage Publications.

[6] Devika, J. (2009). *Bodies gone awry: The abject woman in contemporary Kerala*. *Indian Journal of Gender Studies*, 16(1), 21–46.

[7] The News Minute. (2017, August 7). *Dress code repression: Kerala's history of breast tax for Avarna women*.

[8] Geetha, V. (2019). *Gender, Caste and the Imagination of Equality in India*. Orient BlackSwan.

[9] Manu Pillai. (2019). Book excerpt: *The Courtesan, the Mahatma & the Italian Brahmin* — chapter "The Woman with No Breasts." indianculturalforum.in

[10] Velivada. (2017, अगस्त 5). *Remembering Nangeli, challenged the caste system refusing to pay the breast tax.* Velivada

[11] Ram, K. (2021). *Body as Revolt: The Myth of Nangeli, the Woman who Covered her Breast*. *Shanlax International Journal of English, 9*(4), 1-8. Shanlax Journals
[12] Chaudhuri, M. (2017). *Her Story: Nangeli From Kerala & Her Fight Against Casteist Brutality*. *Homegrown India*. Homegrown
[13] AlJazeera. (2022, March 8). *Nangeli — the forgotten Dalit woman who stood up against Travancore's 'breast tax'*. Al Jazeera
[14] The Print / Mehrotra, D. P. (2022). *Her Stories: Indian Women Down the Ages* (खंड जिसमें Nangeli की कथा शामिल है). ThePrint
[15] "Rise of Dalit Feminism: Provincializing Gender Justice" (Sahityasetu, e-journal)

[16] **Devika, J. (2010).** *En-gendering Individuals: The Language of Re-forming in Early Twentieth Century Keralam* (pp. 41–43). Hyderabad, India: Orient Blackswan.

[17] **Velivada. (2022).** *Nangeli: The Woman Who Sacrificed Her Life Against Caste and Patriarchy.* Retrieved from https://velivada.com

[18] **Panikkar, K. N. (1995).** *Culture, Ideology, Hegemony: Intellectuals and Social Consciousness in Colonial India* (pp. 92–97). New Delhi: Tulika Books.

[19] **Justice News. (2023).** ***Nangeli****: The Woman Who Defied the Breast Tax in Travancore.* Retrieved from https://www.justicenews.co.in

[20] **Panikkar, K. N. (1995).** *Culture, Ideology, Hegemony: Intellectuals and Social Consciousness in Colonial India* (pp. 94–97). New Delhi: Tulika Books.

[21] **Media India Group. (2024).** *Historical Voices of Resistance: Remembering Nangeli.* Retrieved from https://mediaindia.eu

[22] **Velivada. (2022).** *Nangeli: The Woman Who Sacrificed Her Life Against Caste and Patriarchy.* Retrieved from https://velivada.com

[23] Supreme Court of India. (2018). *Indian Young Lawyers Association vs. State of Kerala (Sabarimala Judgment).* New Delhi: Supreme Court Reports, p. 17.

[24] Kumar, R. (2019). *#MeToo Movement and the Changing Feminist Discourse in India.* Economic and Political Weekly, 54(32), 52–58.

[25] Human Rights Watch. (2021). *India: Caste-Based Violence and Justice Denied.* New Delhi: HRW Publications, pp. 20–25.

[26] Nair, K. Saradamoni. (2023). *Caste, Class, and the Politics of Equality in South India.* Chennai: Orient Blackswan, pp. 116–120.

[27] National Human Rights Commission (NHRC). (2023). *Annual Human Rights Report on Violence in North-East India.* New Delhi: Government of India Press, p. 41.

[28] The Hindu. (2024, May 14). *Attacks on Tribal Communities in Odisha and Madhya Pradesh.* p. 5.

[29] Singh, H. (2021). *Women and the Farmers' Protest: Gendered Participation in Agrarian Movements.* Indian Journal of Political Studies, 45(2), 80–90.

[30] Raj, S. (2022). *Gender, Justice and Resistance: Contemporary Feminist Movements in India.* New Delhi: Sage Publications, p. 64.

Fig. 1. https://en.wikipedia.org/wiki/Nangeli
Fig. 2. source: www.clpr.org.in
Fig. 3. https://sudeshdjvindia.blogspot.com